

स्वर (सुर)

जिस शब्द में लगातार भावक हों, उसे 'स्वर' कहते हैं।

मुख्य स्वर सात प्रकार के होते हैं, जिनके नाम कुछ इस प्रकार हैं—

- 1 ब्रह्म (सा)
- 2 नद्यूष्म (र)
- 3 मध्यार (ग)
- 4 मध्यम (म)
- 5 पञ्चम (प)
- 6 द्वितीय (ष)
- 7 निष्ठाव (नि)

इनके अलावा कुछ और भी स्वर होते हैं जो इन स्वरों से ही निर्भित हैं। वह दो प्रकार में होते हैं।

शुद्ध स्वर

जो स्वर अपने निरिति स्थान पर रहते हैं, अपने स्थान से ऊपर या नीचे नहीं होते, तो सर्वे को शुद्ध स्वर कहते हैं। संगीत के सात स्वरों में केवल 'सा' और 'पु' हैं जो अपने स्थान से नहीं होते। इन्हे आठा स्वर भी कहा जाता है।

ii) विकृत स्वर

जो स्वर आपने स्थान से ऊपर गा नीचे भी और हटते हैं, उसे विकृत स्वर कहते हैं। संगीत के सात रवरों में पाँच रवर विकृत स्वर हैं। उनके नाम हैं - दु, ग्र, गा, दा, दि। विकृत स्वरों को दो गाहों में बांट रखते हैं।

a) कोराल स्वर

→ कोराल के विकृत गा नीचे स्वर तब होता है जब सामान्य प्रयोग में नाता जाता है जब रवर नीचे की ओर हटे। कोराल रवरों की स्वर के नीचे एक टुकड़े से दरशाया जाता है। उदाहरण - दु, ग्र, दा, दि।

b) तीव्र विकृत

→ तीव्र विकृत गा तीव्र हुए उन रवरों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपने स्थान से ऊपर की ओर हटे। इन रवरों की स्वर के ऊपर को छढ़े होते हैं दरशाया जाता है। उदाहरण - म।

अलंकार (पल्ला) / (आभूषण, गहना)

नियमित वर्ण संगुदाय की अलंकार कहते हैं। स्वर का समृद्ध जो कि खुद को बार-बार प्रत्युत्तर करे। संगीत में अलंकार का बहुत महत्व है। सुरों को पतला करने के लिए अलंकारों का अभ्यास किया जाता है।

शाह

थाट (मैल)

स्वरों की नियमितीय रचना जिनसे राग बनाए जाते हैं, उन्हें थाट कहते हैं। थाट के बारे में यह तीन महत्वपूर्ण बातें हैं। बातें हैं-

1. किसी भी रूप में है, थाट में सातों स्वरों का प्रयोग होता आ है।
2. थाट में रंजकता (सुवरता / मधुरता) होती अवश्यक है।
3. थाट में लंबाप घटाव के लिए अवरोह की कोई आवश्यकता नहीं होती।

थाट दस प्रकार के होते हैं।

- i) शूल्याभ थाट
- ii) शूलाभ थाट
- iii) शृगाभ थाट
- iv) शूरव थाट
- v) पुर्वी थाट
- vi) भारवा थाट
- vii) काकी थाट
- viii) आसवरी थाट
- ix) शौरवी थाट
- x) तोड़ी थाट

नाद (आवाज़)

संगीत उपरोक्त आवाज़ को नाद कहते हैं।

1 नाद का बड़ा या छोटा होना (Volume) :-
उसी आवाज़ को छोटा या तेज़ भलना।

2 नाद की जाति या गुण (Difference) :-
इसमें हम दो उत्पत्ति स्थिर कीचे पर
विपरीत कर के सकते हैं। कि यह किसी महुख्य
या किस संगीत उपकरण की घटनी है।

3 नाद की ऊँचाई या नीचाई (Pitch) :-
दुसरी संबंध उपर्युक्त हरे कीमुख हाल विल आवाज़ से है। आवाज़ उत्तरा अधिक होता, उत्तरा ही अधिक नाद होता।

राग

द्वितीय की एक विशेष रूचना, जिसे कई द्वारा सुन्दरता प्राप्त होती है, उसे राग कहते हैं। राग का विभीषण यह है कि यह से कोई राग बनाए जा सकते हैं। आज के समय में 6 राग तथा 30 रागोंनियों मात्री होते हैं।

1 राग :- श्री

रागों :- माझ, बसंत, धनाखी, अस्सावरी, मालवी

2 राग :- दीपक

रागिनियोः - कान्हररा, केवर, नट, देशी कामोदी

3 राग :- मेघ

रागिनियोः - देशी कार, झज्जाली, गुरजी, टंके, मल्लर

4 राग :- हिंडूल

रागिनियोः - पदमंजरी, बिलाका, ललित, रामकली, दशादी

5 राग :- गालकीश

रागिनियोः - गुणली, कुकुरा, हरी, ताडी, खम्मावती

6 राग :- गुरव

रागिनियोः - गंगाली, कसीदाकी, मधुमादकी, वराठी, गुरव

श्रुति

स्वर जो सप्तक के बाहर से सरों के बीच नहीं आते हैं। उन्हें श्रुति कहते हैं।

बे एक सप्तक में को 22 श्रुतियाँ मिलती हैं।

गया है जिनमें हमारे सात 202 कुछ इसे प्रभार हैं।

4 - सा
7 - र
13 - फ

17 - मा प
20 - ध
22 - नी

निवेदण

जो संगीत तालबद होता है, उसे निवेदण कहते हैं। इसमें शुप्र, धमर, टप्पा, बरयाम, नुमर आदि निवेदण गान कहलाते हैं।

वर्ण

गाने समय का प्रयोग होने वाली विधियाँ को वर्ण कहते हैं।

वर्ण के द्वारा प्रकार हैं-

- 1 स्थायी - नहराव के साथ।
- 2 आरादी - नीचे से ऊपर की ओर।
- 3 अवरोही - ऊपर से नीचे की ओर।
- 4 संचारी - ऊपर प्रवृत्त वर्षों की भिन्नता गाया जाए।
- 5 झोतव्य - सभी वर्षों का प्रयोग संगीत में करना।

रूपाम

कम से सात रूपामों का सम्मह।

गामक

आंदोलन के द्वारा जब दूरों से कंपन देती है, उसे गामक कहते हैं। जैसे - सा, रा, गा आदि

इसके 15 प्रकार होते हैं।

मुक्ति

दो राम श्वरों का बहुत ही राम
द्वादश के साथ लेकर आखिरी आखिरी २०२ की
धूमधार वही पर रागात करते ही वही है

क्रिया

किसी स्वर का उच्चारण करते समय उसके
आगे या दीपि के किसी स्वर के कुछ छोटे
या उसका सार्व वरों की कठोरता है।

लक्षण गीत

जिस गीत में अपने राग का पूरा लक्षण ही,
लक्षण गीत कहलाता है।

स्वर मालिका

राग में प्रयोग किए गए स्वरों की जानबाह्य
रचना को स्वर मालिका कहते हैं।

पर्याय स्वर

जिस राग में जो स्वर प्रयोग नहीं होते।

विवादी स्वर

जिस राग में जो स्वर प्रयोग नहीं होते।

~~ले किए उनका प्रयोग होता है या होना है~~

स्वर के रूप

वादी - जिस स्वर पर अधिक उहुरात ज्यादा होता है।
राम का राजा। प्रथम स्वर, और द्वितीय स्वर

सम्बादी - वादी से कम प्रयोग लेकिन भी खरों से ज्यादा।

अनुवादी - सम्बादी के बाद प्रयोग होने वाले स्वर।

विवादी - जो संगीत को खराब करे।

पूर्णिंग

पहले घार स्वरों को पूर्णिंग कहते हैं।
इन स्वरों में कोई वादी होती हो पूर्णिंग प्रधान होता है।

उत्तरांग

आखरी छीसे स्वरों को उत्तरांग कहते हैं।
इन स्वरों में कोई वादी होती हो तो को उत्तरांग प्रधान होता है।

टप्पा

यह शब्द संगीत के प्रदर्शन करने का कहा हुआ है। इसमें अलारी न के बराबर होता है। इस गाने के लिए गला चापी तक तैयार होना चाहिए। टप्पा का प्रयोग पंजाब में अधिक है।

टाल

संगीत में सामय विभिन्न करने का एक साधन है।

गम्भूर (Range)

संगीत में एक सफल को प्रयोग होता है, जो गम्भूर कहते हैं।

लय

जब हम गारों के समूह को नियंत्रित नियमों द्वारा नहीं है, तब हम संगीत को लय में कहते हैं।

राग बिहारा

थाट - विलाक्त

आरोह - नि, सा, गा, म, प, नि सा
(र, घ वर्जित)

जाति - ओँडव - सम्पूर्ण

वादि - गंधार (र)

सम्बादी - निष्ठाद (नि)

समय - रात्रि के प्रथम छह प्रहर।

अवरोह - सां नि ध प, म प, ग म ग रे सा

पकड़ - नि, सा, ग म प, ग म ग रे सा,
सां नि ध प म प, ग म ग रे सा।

कभी - कभी म और शेष स्वर शुल्क प्रयोग नहीं
जाते हैं।

राग बुद्धावनी सांगा

थाट - काली

जाति - ओँडव - ओँडव

वादि - अँष्टष्मा (र)

सम्बादी - पंचम (प)

समय - दिन का तीसरा प्रहर।

आरोह - सा, र म प नि सा

अवरोह - उसां नि ध म रे सा

पकड़ - नि, सा, र, म, र, प, ग रे सा

र, घ वर्जित स्वर हैं।

ताल

ताल दादरा - मात्र ६

इकुन

1	2	3	4	5	6
दा	दी	ना	दा	दू	ना
X			O		

इकुन

1	2	3	4	5	6
दादी	नादा	दुला	दादी	नादा	दुला
X			O		

ताल सुपक - मात्र 7

इकुन

1	2	3	4	5	6	7
ति	ति	न	दि	न	दि	न
X			2		3	

सा

1	2	3	4	5	6	7
ति	ति	न	दि	न	दि	न
O			X		2	

दुर्घुन

१	२	३	४	५	६	७	८
ना	ति	ना	ति	ना	ति	ना	ति
X				2		3	

या

१	२	३	४	५	६	७	८
ना	ति	ना	ति	ना	ति	ना	ति
0				X		2	

ताल कंडरपा - मात्रा 8

दुर्घुन

१	२	३	४	५	६	७	८
या	ति	ना	ति	ना	क	ति	व
X				0			

दुर्घुन

१	२	३	४	५	६	७	८
यामे	नाति	नक	तिंन	यामे	नाति	नक	तिंन
X				0			

ताल झापलाल - मात्रा 10

दुर्घुन

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
टी	ना	टी	टी	ना	टी	ना	टी	टी	ना
X		2			0		3		

द्वितीय

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
द्वितीय	द्वितीय	तीसरी							
X		2			0		3		

ताल त्रिताल - प्रकार 16

द्वितीय

1	2	3	4	5	6	7	8
द्वा	द्वि	द्वि	द्वा	द्वि	द्वि	द्वि	द्वा
X				2			

9	10	11	12	13	14	15	16
द्वा	तिं	तिं	ता	ता	तिं	तिं	द्वा
0				3			

द्वितीय

1	2	3	4	5	6	7	8
द्वितीय							
X				2			

9	10	11	12	13	14	15	16
द्वि							
0				3			

ताल एकताल - मात्रा 12

द्विगुण

१	२	३	४	५	६
X		०		२	

७	८	९	१०	४	१२
०		३		४	

द्विगुण

१	२	३	४	५	६
त्रितीयि	षाष्ठीतिरक्ति	द्वितीया	पाता	षाष्ठीतिरक्ति	३ (त्रितीया)

७	८	९	१०	४	१२
०		३		४	

ताल चोटाल - मात्रा 12

द्विगुण

१	२	३	५	५	६
था	था	द्वि	ता	केट	था

७	८	९	१०	४	१२
ता	ता	द्वि	ता	माटि	मिटा

दुगुन

१	२	३	४	५	६
धारा	दिंता	लिंदा	दिंता	लिंका	गर्दिंप
X	O			2	

७	८	९	१०	११	१२
धारा	दिंता	लिंदा	दिंता	लिंका	गर्दिंप
O		3		4	

ताल तिलवाइ - मात्रा 16

दगुन

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	तिर्कि	दि.	दि.	धा	धा	दि.	दि.
X				2			

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ता	तिर्कि	दि.	दि.	धा	धा	दि.	दि.
O				3			

दुगुन

१	२	३	४	५	६	७	८
धारिकि	दिंति	धारा	दिंति	तारिकि	दिंति	धारा	दिंति
X				2			

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धारिकि	दिंति	धारा	दिंति	तारिकि	दिंति	धारा	दिंति
O				3			

1 आरोह - सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां।
 अवरोह - सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा।

2 आरोह - सासा, रेर, गरा, मम, पप, धर,
 नीनी, सांसा।
 अवरोह - सांसा, नीनी, धर, पप, मम, गरा,
 रेर, सा सा।

3 आरोह - सारेगा, रेगम, गमप, मपध, पदनी,
 धनीसा।
 अवरोह - सांनीध, नीधप, धपम, पमग, मगर,
 मारेसा।

4 आरोह - सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनी,
 पदनीसां।
 अवरोह - सांनीधप, नीधपम, धपमग, पमगर,
 मगरेसा।

5 आरोह - सारेसारेगा, रेगरेगम, गमगमप, मपमपध,
 पदपदनी, धनीधनीसा।
 अवरोह - सांनीसांनीध, नीधनीधप, धपधपम, पगपमग,
 मगमगर, गरेगरेसा।

चित्रपट संगीत

- चित्रपट (फिल्म) में प्रयोग किया जाने वाला संगीत।
- सारल पहचान
 1. हलके - फुलके गीत
 2. आँखें के रुदना
 3. सस्ते दंगे के शब्दों का प्रयोग
 4. भाव के भार हुए गीत
 5. चटकीली भृति विदेश
- मुख्य उद्देश्य - सुनने में मधुर एवं शीघ्र प्रभाव
- स्वर, ताल, शास्त्र, राग आदि का कोई बन्धन नहीं है।
- ताल वादरा और ताल कहरवा का अधिक प्रयोग।
- यह संगीत उससे सम्बन्ध सम्बन्धित फिल्मों की खुलीकों की याद हिलाता है।
- इसमें संगीत की प्रशंसा के लिए संगीत की उत्तम आत्मरक्षक नहीं है। यह लय प्रधान होता है।

शास्त्रीय संगीत

- विशेष नियमों से बंधे हुए संगीत की शास्त्रीय संगीत कहते हैं। उन नियमों को पालन आवश्यक है।
- नियम -
 1. स्वर, लय, ताल इष्ट होना।
 2. राग के अनुकूल खरों को लगाना।
 3. गाने बजाने में क्रम होना।
 4. उल्लाप-तान, लोलतान, सरगाम आदि की तर्जारी आरे सकार के साथ उपयोग।
- कुछ गणक इन नियमों की कड़ी वर्षों तक उपयोग

~~करते हैं और मेरे संगीत के वास्तविक उद्देश्य को दूर हो जाते हैं और उनकी गायकी में रस नहीं रहता।~~

- शास्त्रीय संगीत में संगीत का भीत्रीके शाष्ट्र मध्यवर्द्धन नहीं होता। अगर इह जाए तो उसका प्रभाव अच्छा नहीं रहता।
- शास्त्रीय संगीत की प्रशंसा करने के लिए संगीत के शाढ़ा-बहुन जान तो आवश्यक है। गारीकियों को न समझाना अवश्यक नहीं, लेकिन बाहु-हान तो अलाप-तान का ज्ञान तो होना चाहिए। यहीं संगीत के प्रधान होता है।

राग मालकोस्म

आरोह -

की स ग्र म, ध नी सं।

अवरोह -

सं नी ध, म, ग्र म, ग्र स।

पकड़ -

म ग्र म ध की ध, म, ग्र स।

अलाप -

सं नी म ध ध की सं, म ग्र ग्र,
 म ध ग्र, नी ध म ग्र, ग्र म ग्र स,
 ग म ग, ध म ध ध की ध म,
 दृ की सं नी ध म, ग्र म ग्र स ॥ ॥ ॥

शाट - फ़ूरवी
 जाति - आँड़व - आँड़ते
 गाड़ी - म
 संगादी - सा
 समय - रात्रि का द्वितीय प्रदर्श

स्थाई -

मुख मोड़ मोरु मुसकात जाता
 ओति छबि लिनार चलि यत संगात

अंतरा

ओ हु की अंखियाँ रसिली मन भाई
 या बोदा सुंदर वा उख लाई
 चली जात सब सखिया साथ, मुख -

ताने (स्थाई)

साहु	मधु	नीसा	छनी	सांनी	धुम	ग्राम	गुस
संनी	संनी	छनी	धन	ग्राम	धुम	ग्राम	गुस
संसं	नीधु	नीनी	धुम	धध	ग्राहु	मन	मस

ताने (अस्थाई)

सगा	मम	ग्राम	धध	ग्राव	नी	धनी	संस
संनी	धम	ग्राम	ग्रास	ग्राम	धुनी	संहु	संड

राम यमन

आरोह-

सा रे रा मे प ए नी साँ।

अवरोह-

साँ नी ए प मे रा रे सा।

अलाप-

सा इ नी रे सा इ नी रे रा स री }
 रा मे रे रा इ, नी इ रे रा स, नी }
 रा मे थ नी मे थ नी स, थ, नी रे थ }
 स, नी री थ ए प इ प मे रा स, रे }
 रा स, रे सा स, थ नी रे स इ सी |

थाट- कल्याण

जाति- सम्पूर्ण - समर्पण

वादी- रा

भंगावी- नी

समय- रात्रि का प्रथम प्रदर्श

पकड़- नी रे रा रे सा, पमे रा रे सा।

स्थाई-

रे री आली विया लिन-

सखी उ री आली विया - लिन-

कल्प न परत कुटि-

घरी पन घन घन

अंतरा - 1

जब से विद्या प्रदेस गवान किए
रतियों कहत मौह तारे गवान - गवान

तारे (स्थाई) -

~~वीर गम पद नीसा | वीर पर राज सा~~

गम पथ वीसां रेसां वीधि पर्म गरे था

साँची थप मध्य गर्मि | परम राम गरे सा

(II) (3id21) -

सावधानी द्या मेरे लिए। जीर्ण गाम धय नीला

સાંજ દ્વારા માંપ આગમ | બધ વીસ દાખ સા

राग जैनपुरी

आरोह -

सा रे मा प द्य त्री-साँ।

अन्तर्राष्ट्रीय-

सा वी द प म ग र आ।

अतिथि-

सा० ५, रे० मा० ५, पा० ५, प छ नी सा० ५ नी
ए० पा० ५, सा० नी छु पा० मा० प गा० मा० प गा०
५, रे० सा० ५, रे० सा० ५, रे० मा० पा० ५ ५ ५।

पहुँच -

म म प, नी द, द, द म प गु र
म पा

स्थाई

थोट - आसावरी शाह

बाबू - बाडव - समृद्ध

बादो - द

भगवदि - गा

झाख - दिन का द्वितीय प्रहर।

स्थाई -

परिए पाथन वाले सजनी
जो ना गाते चुप्पियां गुनियां की सीख।

अंतरा

हाथ जोड़ किर झारो होव
एसे नर के पास त जौरो
दरस कहे वा सो नित डरियो। परिए -

ताने (स्थाई)

सारे	माप	दुर्दी	सांस		वील	पाम	दारे	जारा
सांस	नी-नी	दुर्द	पाप		माप	दुर्द	दुर्द	जारा
धदा	बोसा	दुर्दी	सांसां		शीर्दी	धम	दारे	साम

तात्त्व (अंतरा)

रेम पर मध्य दृश्य प्रथम नीचे छाया साइड

साइड छाया भवा रेसा साइड मध्य दृश्य साइड